# प्रतिबंधों पर पुतिन का जवाब

**ये घटनाएं एक बार फिर साबित कर रही हैं कि आज के दौर में युद्ध किसी के लिए भी आसान विकल्प नहीं होता। क्या ये संकेत दोनों पक्षों को युद्ध विराम की ओर ले जाकर शांति की कोई सम्मानजनक राह ढूंढने को प्रेरित करेंगे? मौजूदा स्थितियों में हम इसकी बस उम्मीद ही कर सकते हैं।**

मोहन बिष्ट।।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की संभावना का जिक्र करके अचानक सबको सकते में डाल दिया। दुनिया शीत युद्ध के दौरान इस तरह की परिस्थितियों की गवाह रही है। अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के पास भी इसके जवाब में अपनी सेना को परमाणु हमले के लिए तैयार रहने का आदेश देने का ऑप्शन था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। अमेरिका के संयुक्त राष्ट्र में राजदूत ने रविवार की दोपहर को सुरक्षा परिषद को भरोसा दिलाया कि रूस पर उनकी ओर से कोई खतरा नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि पुतिन का यह कदम गैरजरूरी है और इससे सबकी सुरक्षा को खतरा हो सकता है। वाइट हाउस ने भी स्पष्ट किया है कि उसकी ओर से अलर्ट के स्टेटस में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके बावजूद पुतिन के इस अलर्ट संबंधी आदेश का परिणाम यह हुआ कि परमाणु युद्ध की आशंका दुनिया के सामने एक वास्तविक खतरे के रूप में आ खड़ी हुई है। इसके साथ ही यूक्रेन पर रूस का हमला, जिसे खुद पुतिन एक सीमित सैन्य कार्रवाई बता रहे थे, उसे एक ऐसे युद्ध के रूप में देखा जाने लगा, जिसके प्रभावों की व्यापकता किसी के काबू में नहीं रह गई है।

सवाल है कि हमले के बाद के इन चार दिनों में आखिर ऐसा क्या हुआ कि खुद पुतिन अपने शुरुआती दावों के उलट संकेत देने को मजबूर हो गए? जवाब चाहे जो भी हो, इससे इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि यूक्रेन के खिलाफ शुरू की गई उनकी सैन्य कार्रवाई उतनी आसान साबित नहीं हुई, जितनी पुतिन को लगी थी। पुतिन के आह्वान के बावजूद यूक्रेनी सेना में फूट, विभाजन या बगावत के कोई संकेत अभी तक नहीं दिखे हैं बल्कि आम यूक्रेनवासियों में इस हमले के खिलाफ जिस तरह का जज्बा दिख रहा है, उससे लगता नहीं कि आगे की राह भी रूसी सेना के लिए आसान रहने वाली है। इस बीच नाटो देशों ने यूक्रेन के पक्ष में सेना भले न भेजी हो, उनकी तरफ से हथियारों की सप्लाई भी खासी महत्वपूर्ण साबित होने वाली है। रविवार को यूरोपियन यूनियन ने इतिहास में पहली बार किसी युद्धरत देश को हथियारों की आपूर्ति करने का फैसला किया। मगर रूस के लिए इससे ज्यादा चिंताजनक है आर्थिक प्रतिबंधों का एलान। यूरोपियन यूनियन कमिशन और अमेरिका की ओर से रूसी केंद्रीय बैंक पर प्रतिबंध लगाने और रूस को स्विफ्ट सिस्टम से आंशिक तौर पर निकालने का फैसला बेहद गंभीर है। स्विफ्ट एक मेसेजिंग प्लैटफॉर्म है जिसके जरिए तमाम देश वित्तीय लेन देन का निर्देश देते हैं और इससे 11,000 बैंकिंग और वित्तीय संस्थान जुड़े हुए हैं। इन कदमों से रूस के लिए आयात–निर्यात बिलों का भुगतान तो मुश्किल हो ही सकता है, उसकी पूरी वित्तीय व्यवस्था के बैठ जाने की भी नौबत आ सकती है। इसलिए रूस ने ब्याज दरों में भारी बढ़ोतरी के साथ कैपिटल कंट्रोल जैसे कदम उठाए हैं। ये घटनाएं एक बार फिर साबित कर रही हैं कि आज के दौर में युद्ध किसी के लिए भी आसान विकल्प नहीं होता।

## पर्यावरण

**अशोक वोहरा।**

सोफिस्टों के अध्ययन का पहला क्षेत्र पर्यावरण था। इन विचारकों ने प्राकृतिक राज्य को एक स्वतंत्र तत्व के रूप में विचार करने का निर्णय लिया, एक दृष्टिकोण जो उस समय के लिए आश्चर्यजनक रूप से नवीन और अभूतपूर्व था। दुर्भाग्य से, पेपिरस पर इन पहले लेखन का कोई भी पूरा काम नहीं बचा है। वर्तमान में, पूर्व–दार्शनिक विचारकों द्वारा व्यवहार किए जाने वाले अधिकांश विषयों को वैज्ञानिक विषय माना जाएगा। दुनिया की उत्पत्ति, इसकी संरचना और संरचना, जीवन कैसे हुआ? ये ऐसे विषय हैं जो विज्ञान को कवर करते हैं जैसेरू खगोल विज्ञान, भौतिकी और जीव विज्ञान। परमात्मा की वैधता पर परिष्कारकर्ताओं के कार्य दर्शन से अधिक धर्मशास्त्र से जुड़े हैं। पूर्व दार्शनिक ज्ञान की उत्पत्ति एशिया के माइनर के एजियन तट पर इलियट शहर के मिलिटस में हुई थी।

धर्म-दर्शन

## संपादकीय

### जाति–धर्म के मुद्दे

उत्तर प्रदेश में चाहे हाथरस का मामला हो या उन्नाव और लखीमपुर खीरी का, हर बार प्रियंका गांधी की अगुआई में कांग्रेस ही विपक्ष की भूमिका निभाती नजर आई। लेकिन कांग्रेस को तीन प्रतिशत से भी कम मत मिले। दूसरी तरफ तकरीबन चार साल विपक्षी भूमिका से गायब रहे अखिलेश बीजेपी की चुनौती बनकर उभरे। उत्तर प्रदेश के चुनाव नतीजों ने यह भी संकेत दिए हैं कि विकास पर भी राजनीति हो सकती है। मुस्लिम समुदाय ने थोक के तौर पर समाजवादी पार्टी का समर्थन किया। बीएसपी के मुस्लिम उम्मीदवारों पर मुस्लिम समुदाय ने भरोसा नहीं किया। बीएसपी के पास अपना कैडर वोट बैंक रहा है। लेकिन इस बार वह भी धाराशायी हो गया। उसका एक हिस्सा बीजेपी के साथ लाभार्थी समुदाय के रूप में जुड़ गया तो दूसरा हिस्सा समाजवादी पार्टी के पास चला गया। अखिलेश के 2012 से 2017 के कार्यकाल के कानून व्यवस्था की दुर्गति का मसला चुनाव प्रचार के दौरान छाया रहा। अखिलेश लोगों को यह भरोसा दिलाने में नाकाम रहे कि अगर उनकी वापसी हुई तो दोबारा ऐसा नहीं होगा। उन्होंने सार्वजनिक मंचों से जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया, उनके समर्थकों की भाषा जिस तरह आक्रामक हुई, उसने मतदाताओं को आशंकित ही किया। लोकतंत्र के लिए यही बेहतर स्थिति होती है। लेकिन ऐसा विकास की राजनीति को भी जाति–धर्म का सहारा लेना ही पड़ता है। ऐसे में लगता नहीं कि जाति और धर्म केंद्रित राजनीति से जल्दी पीछा छूटने वाला है।

**उत्तर प्रदेश समेत चार राज्यों में बीजेपी की वापसी के बाद कहा जा सकता है कि जनता ने अब शासन की बीजेपी वाली अवधारणा को स्वीकार कर लिया है।**

# कानून व्यवस्था की भूमिका

उमेश चतुर्वेदी।।

उत्तर प्रदेश के चुनावी नतीजों ने एक वर्ग को चौंकाया है। लेकिन जिनकी नजर सियासी सतह पर थी, उन्हें योगी आदित्यनाथ की अगुआई में बीजेपी की जीत पर कोई संशय नहीं था। इन चुनाव नतीजों ने राजनीति में बीजेपी को केंद्रीय तत्व के रूप में स्थापित कर दिया है। समाजवादी विचारक रजनी कोठारी कांग्रेसी वर्चस्व के दौर में 'शासन की कांग्रेसी अवधारणा' की बात करते थे। उत्तर प्रदेश समेत चार राज्यों में बीजेपी की वापसी के बाद कहा जा सकता है कि जनता ने अब शासन की बीजेपी वाली अवधारणा को स्वीकार कर लिया है। राजनीतिक पंडितों को इस जीत को इस संदर्भ में भी देखना होगा।

बीजेपी की शासन की इस अवधारणा को बल मिला है कानून व्यवस्था को सुधारने की दिशा में उठाए गए कदमों से। नोएडा और गाजियाबाद राजधानी दिल्ली से सटे हुए हैं। कुछ साल पहले तक यहां कानून व्यवस्था बेहद खराब होती थी। क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के हिसाब से गाजियाबाद आपराधिक ग्राफ के मामले में नंबर वन बना रहता था। लेकिन योगी राज में उत्तर प्रदेश के लिए यह अवधारणा बदली है। इसका असर यह है कि नोएडा–गाजियाबाद तक के लोग कई बार दिल्ली की कानून व्यवस्था की तुलना में अपनी कानून व्यवस्था को बेहतर

बताते नहीं थकते।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में छिनौती और लूटपाट की घटनाओं के चलते एक दौर में रात को गुजरने वाली बसों को भी बेड़े में भेजा जाता था। महिलाएं चाहे गांव की हों या शहर की, गहने पहन बाहर निकलने से हिचकती थीं। लेकिन योगी के शासन के दौरान इस स्थिति में बदलाव आया। महिलाएं चूंकि पहले की तुलना में निर्भय हुईं, जब उन्हें मौका मिला उन्होंने ईवीएम मशीनों पर कमल का बटन दबाकर आभार जताया। हाल के कुछ वर्षों में महिलाएं अपनी स्वतंत्र राजनीतिक सोच रखने लगी हैं। जाति और धर्म आधारित उत्तर प्रदेश की राजनीति में कई जातियों के बारे में मान लिया जाता है कि वे फलां पार्टी की ही समर्थक हैं। लेकिन महिलाओं ने अपनी जातीय पृष्ठभूमि की अवधारणा के खिलाफ मतदान किया है। इसकी बड़ी वजह कानून व्यवस्था में आया बदलाव है।

उत्तर प्रदेश में बीजेपी ने जो शासन का मॉडल प्रस्तुत किया, उसमें तमाम कल्याणकारी योजनाएं भी सामने आईं। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत राज्य में पैंतालिस लाख मकान दिए गए। अगर औसतन एक परिवार में छह लोगों के ही हिसाब से देखें तो मकानों के लाभार्थियों की संख्या दो करोड़ सत्तर लाख बैठती है। कोरोना के दौरान देशभर से मजदूरों की जो वापसी हुई, उनमें सबसे ज्यादा लोग इसी इलाके के थे। उनके सामने घर वापसी के बाद खाने–पीने की बड़ी समस्या थी। लेकिन यहां रहने वाली महिलाओं के जनधन खाते में सरकार की ओर से पैसे मिले, लोगों को लगातार मुफ्त राशन मिला। इसकी वजह से लोगों की जिंदगी की दुश्वारियां काबू में रहीं। लाभार्थी वर्ग बीजेपी के लिए बड़े वोट बैंक के रूप में उभरा।

बीजेपी का हिंदुत्व का अजेंडा छुपी हुई बात नहीं है। विपक्षी दलों की ओर से कभी सांप्रदायिकता के उभार के प्रतीक के तौर पर इसकी आलोचना की जाती है तो कभी दूसरे मुद्दों से ध्यान भटकाने के नाम पर। लेकिन यह मुद्दा भी खूब दौड़ा। काशी, मथुरा, अयोध्या जैसे धार्मिक स्थलों पर बीजेपी की जीत के पीछे इसे ही बड़ा कारक माना जा रहा है।

### अष्टयोग- 4916

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 4 | | 5 | | 1 | 6 |
| | 30 | 2 | 36 | | 32 | |
| 5 | | | 1 | 7 | | 4 |
| 6 | 38 | 4 | 34 | 1 | 26 | 5 |
| 4 | | 5 | 7 | | | 1 |
| | 31 | | 32 | 4 | 30 | |
| 2 | 3 | | 4 | | 6 | 7 |

*प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.*

**अष्टयोग 4915 का हल**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | 1 | 2 | 5 | 7 | 4 | 3 |
| 3 | 32 | 6 | 36 | 2 | 30 | 1 |
| 4 | 3 | 7 | 1 | 6 | 2 | 5 |
| 5 | 26 | 1 | 34 | 4 | 38 | 6 |
| 1 | 2 | 3 | 7 | 5 | 6 | 4 |
| 2 | 30 | 4 | 32 | 3 | 31 | 7 |
| 7 | 6 | 5 | 4 | 1 | 3 | 2 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अपना ब्लॉग

### योगी का भी चेहरा पार्टी ने आगे किया

**मोहन।** उत्तर प्रदेश में दो जिले गाजीपुर और आजमगढ़ ऐसे हैं, जहां बीजेपी का खाता भी नहीं खुला। लेकिन गोरखपुर मंडल में पार्टी की जैसे लहर चली। योगी आदित्यनाथ इसी इलाके से आते हैं। वीरबहादुर सिंह के बाद गोरखपुर को योगी के रूप में अपने बीच का दूसरा मुख्यमंत्री मिला। इसमें शक नहीं कि उत्तर प्रदेश में पश्चिमी इलाकों में तीन कृषि कानूनों से उपजे किसान आंदोलन का असर था। लेकिन नानक जयंती के दिन प्रधानमंत्री ने तीनों कानूनों को वापस ले लिया। इसके बाद भी आंदोलन जारी रहा जिसे किसानों ने उचित नहीं माना। रही–सही कसर गन्ना किसानों के बकाये के दस हजार करोड़ के भुगतान ने पूरी कर दी। इसका असर यह हुआ कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बीजेपी को नुकसान होने की जो आशंका थी, वह समाप्त हो गई। 2014 के बाद से बीजेपी लगातार सारे चुनाव प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर लड़ती रही है। लेकिन उत्तर प्रदेश पहला चुनाव रहा, जहां मोदी के साथ योगी का भी चेहरा पार्टी ने आगे किया।